11

पौलुस के लाभ-हानि का विवरण

(फिलिप्पियों 3:4-11)

कई कारोबारी नियतकालिक लाभ-हानि के विवरण जारी करते हैं, जिसमें लाभ और हानि इस लिए बताए जाते हैं कि पता चल सके कि किसी कम्पनी ने धन कमाया है या नहीं। यहूदी रब्बी आवश्यक और अनावश्यक में तुलना करने के लिए लेखाकार की ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल करते थे। यीशु ने अपने परिचित शब्दों में इसी ढंग का इस्तेमाल किया: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?'' (मत्ती 16:26क)। हमारे वचन पाठ में पौलुस ने अपने ही लाभ-हानि का विवरण शामिल कर दिया:

> परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हें मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई (आयतें 7, 8)।

TEV में है ''पर वे सभी बातें जिन्हें मैं *लाभ* मान सकता हूं अब उन्हें मसीह की खातिर *हानि* गिनता हूं'' (आयत 7)।

इस पाठ का अध्ययन करते हुए हम देखेंगे कि पौलुस के लिए कौन सी बात महत्वपूर्ण थी और कौन सी नहीं। हम में से हर किसी को यह पूछने की चुनौती दी जाएगी कि ''मेरे लिए सचमुच में महत्वपूर्ण क्या है?''

अपनी आत्मिक विरासत पर निर्भरता = हानि (3:4, 5क, 7)

अध्याय 3 के पहले भाग में, पौलुस को यहूदी मत से आने वाले मसीही लोगों यानी उन मसीही यहूदियों के विषय में जो यह समझते थे कि अन्यजातियों का खतना किया जाना और उन्हें व्यवस्था के अन्य नियमों का पालन करना आवश्यक है, कहने को दहकती बातें थीं। पौलुस ने इन झूठे शिक्षकों को ''कुत्ते,'' ''बुरे काम करने वाले'' और ''काट-कूट करने वाले'' कहा (आयत 2)। यदि मैं ऐसा करता तो मुझे चुनौती दी जा सकती थी कि ''तुम इस पर क्या जानते हो?'' तुम कभी यहूदी नहीं थे! पौलुस यह साबित करने के लिए कि उसे मालूम *था* कि वह क्या बात कर रहा है, आगे बढ़ा। क्योंकि किसी समय वह व्यवस्था को कड़ाई से मानने वाला यहूदी रहा था।

यह कहने के बाद कि ''असली खतना वाले [मसीही लोग] हैं, ... शरीर में भरोसा नहीं रखते'' (आयत 3), पौलुस ने आगे कहा, ''पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूं यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो [जो यहूदी मत से आने वाले लोगों ने किया था], तो मैं उस से भी बढ़कर रख सकता हूं'' (आयत 4)। उसने अपने और व्यवस्था को

मानने की आवश्यकता की बात सिखाने वालों में अन्तर करने के लिए किहा। अगली आयतों को ''शानदार व्यक्तिगत अंगीकारों में से एक जो पुराने जमाने ने हमें विरासत में दी है।''[1]

एक पुराना परिदृश्य

पौलुस ने पहले एक यहूदी के रूप में अपने जीवन की बात की। उसने अपनी योग्यताएं ऐसे बताईं जैसे वह ''ध्यान से उन्हें गिन रहा और अपने हाथों की उंगलियों पर बता रहा हो।''[2] *उसने इस विवरण के साथ आरम्भ किया: ''आठवें दिन मेरा खतना हुआ'' (आयत 5क)।* एक अर्थ में उसने कहा कि ''तुम खतने की बात करना चाहते हो? *मेरा* खतना व्यवस्था के अनुसार आठवें दिन हुआ था!''

खतना परमेश्वर और अब्राहम की संतान के बीच वाचा का चिह्न है। व्यवस्था कहती थी कि यहूदी लड़कों का खतना आठवें दिन हो (उत्पत्ति 17:12; लैव्यव्यवस्था 12:3; देखें लूका 1:59; 2:21)। फिर पौलुस ने यह कहते हुए आरम्भ किया वह तो *पैदा* ही यहूदी हुआ था। वह यहूदी धर्मांतरित नहीं था जिसने जीवन में आगे चलकर यहूदी धर्म को अपना लिया था।

उसने आगे कहा कि वह *''इस्राएल के वंश का'' था (आयत 5ख)।* ''इस्राएल'' नाम स्वर्गदूत के साथ कुश्ती करने के बाद याकूब को दिया गया था (उत्पत्ति 32:28)। यहूदियों के लिए यह पदनाम पवित्र बन गया, जो यहोवा के साथ उनके विशेष सम्बन्ध का प्रतीक था। इस प्रकार पौलुस ने यह गर्व दिखाया जो यहूदी जाति का होने में उसे मिला था।

पौलुस को यहां तक मालूम था कि वह इस्राएल के बारह में से किस गोत्र का था उसके समय तक गोत्रों की पहचान अधिकतर यहूदियों के लिए धुंधली पड़ चुकी थी, परन्तु प्रेरित को मालूम था कि वह *''बिन्यामीन के गोत्र का'' है (आयत 5ग)।* बिन्यामीन का गोत्र बड़ा गोत्र नहीं था (देखें भजन संहिता 68:27; क NIV में ''बिन्यामीन का छोटा गोत्र'' है), परन्तु इसने यहूदियों के इतिहास में अपनी अलग जगह बनाई थी। इस्राएल का पहला राजा बिन्यामीन के गोत्र से ही था (1 शमुएल 9:1, 2, 21; 10:1, 20-25)। इस्राएल के राज्य का विभाजन होने के समय, बिन्यामीन का गोत्र दाऊद के घराने का वफ़ादार रहा था (1 राजाओं 12:21)।[3]

पौलुस ने यह कहते हुए कि वह ''इब्रानियों का इब्रानी'' (आयत 5घ) है, समाप्त किया। उसकी शब्दावली पौलुस के विषय में कई बातें कह देती हैं। यह संकेत देती है कि उसके माता पिता इब्रानी थे। उदाहरण के लिए उसके घर में इब्रानी भाषा बोली जाती होगी। वचन में ''इब्रानी'' शब्द आम तौर पर यहूदी लोगों द्वारा बोली जाने वाली प्राचीन भाषा के लिए इस्तेमाल हुआ है (देखें यूहन्ना 19:13, 17, 20)। पौलुस ने इब्रानी भाषा सीखी थी और वह इसे बोल सकता था (देखें प्रेरितों 21:40; 22:2; अरामी भाषा ''पौलुस के समय में बोली जाने वाली यहूदी बोली थी।''[4])। परन्तु पौलुस के शब्द इससे भी अधिक कहते हैं यानी वे घोषणा करते हैं कि उसका परिवार यरूशलेम से दूर रहने के बावजूद इब्रानी रीति-रिवाज़ों में बना रहा था (देखें प्रेरितों 21:39; 22:3)। फलस्तीन के बाहर रहने वाले कई यहूदियों ने अन्यजातियों के रीति-रिवाज़ अपना लिए थे परन्तु पौलुस के माता-पिता ने नहीं।

पौलुस की बातें इस बात का प्रमाण है कि वह ''पक्का यहूदी'' था। पौलुस ने सांस्कारिक शुद्धता (''आठवें दिन खतना हुआ''), जातिय शुद्धता (''इस्राएल जाति के, बिन्यामीन के गोत्र

का'') और सांस्कृतिक शुद्धता (''इब्रानियों का इब्रानी'') बनाए रखी थी।[5]

एक नया परिदृश्य

क्या पौलुस का यहूदी जीवन उसके लिए महत्वपूर्ण था? आयत 7 में प्रेरित ने इसे इस बात में जोड़ा, जो उसके लिए ''लाभ'' था। TEV की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो कालांतर में उसने अपनी विरासत को अपने आत्मिक बही खाते के ''लाभ'' के पक्ष में रखा था। परन्तु क्या पौलुस उद्धार के लिए अपनी यहूदी प्राप्तियों पर निर्भर था? नहीं। उसने आगे कहा, *''वर्णन में अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं।''*

कई लोग इस सोच में फंस जाते हैं कि वे जो कुछ उन्होंने विरासत में पाया है उसी पर उद्धार पाएंगे: ''मेरे माता-पिता (या उनके माता-पिता) अपने धार्मिक समूह के समर्पित सदस्य थे।'' वे ऐसे बात करते हैं, जैसे जो कुछ उनके पूर्वजों ने किया है उसे उनके आत्मिक खाते में डाल दिया।'' जाएगा। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं, जिन्हें लगता था कि कथित ''मसीही देश'' में जन्म लेने से वे स्वत: ही मसीही बन जाते हैं।

मैं अपनी विरासत के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। मेरे लक्कड़दादा जॉन विट मायर जॉनसन कोंटी, टैक्सस के पहले प्रचारक। मेरे परदादा जॉन दॉसन डेक्स आरकैंसा, टैक्सस तथा भारतीय इलाके में सुसमाचार प्रचारक थे। मैं मसीही माता-पिता के लिए परमेश्वर को प्रतिदिन धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मुझे ''बचपन से पवित्र शास्त्र ...'' की शिक्षा दी (देखें 2 तीमुथियुस 3:15)। क्या ऐसी विरासत मेरे उद्धार की गारंटी है? नहीं। क्या मुझे इस विरासत पर ''घमण्ड'' करना चाहिए? नहीं। ''... ऐसा न हो कि मैं किसी अन्य बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का'' (गलातियों 6:14क)!

अपनी प्राप्तियों पर निर्भरता = हानि (3:5ख-7)

एक पुराना दृष्टिकोण

अपनी आत्मिक विरासत बताने के बाद पौलुस ने मसीही बनने से पहले की अपनी आत्मिक प्राप्तियों को भी गिनाया। सूची के इस भाग का आरम्भ इन शब्दों से होता है: *''व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूं'' (आयत 5ङ)।* पौलुस ने यहूदी धर्म के ''सबसे खरेपन'' का सदस्य होना चुना था (प्रेरितों 26:5)। उसकी शिक्षा फरीसियों के सबसे बड़े गुरु गमलीएल के पास हुई थी (देखें प्रेरितों 22:3; 5:34)। पौलुस ''बाप-दादों के व्यवहारों'' को मानने में बड़ा समर्पित था (गलातियों 1:14)।

सुसमाचार के विवरणों में फरीसियों का वर्णन इतना नकारात्मक है कि यह कल्पना करना कठिन है कि कोई फरीसी इतना घमण्ड कर सकता है। परन्तु पौलुस का यहूदियों में इतना अधिक सम्मान था। चुनिंदा लोगों में वे आत्माओं, स्वर्गदूतों और पुनरुत्थान जैसे विषयों पर व्यवस्था की बात को मानते थे (प्रेरितों 23:8)। वे व्यवस्था के नियमों का बड़ी कड़ाई से पालन करने की वकालत करते थे (देखें मत्ती 23:23)। जब पौलुस ने कहा कि वह एक फरीसी है तो वह कह रहा था, ''यहूदी का यहूदी'' है।

आगे पौलुस ने कहा, ''*उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सताने वाला*'' *(आयत 6क)* (देखें प्रेरितों 8:1ख, 3; 9:1, 2)। ''क्रिया शब्द 'सताना' (*dikein*) अपने मूल विचार 'किसी चीज़ को भगाना,' 'पीछा करना या मनाना' है। यह किसी सेना के अपने शत्रु के पीछे भागने और इसे भगाने की स्थिति को या शिकारी के अपने शिकार का पीछा करने और उसे भगाने को दर्शाता है।''[6] यदि हमें यह समझने में कठिनाई होती कि पौलुस ने फरीसी होने की बात क्यों लिखीं तो हमें उससे भी दोगुनी दिक्कत यह समझने में होनी थी कि उसने आत्मिक प्राप्ति के रूप में दूसरों को सताने की बात क्यों लिखी। प्रेरित निश्चित रूप में इस पर घमण्ड नहीं कर रहा था कि उसने मसीही लोगों के साथ क्या व्यवहार किया था। एक और जगह उसने लिखा, ''क्योंकि मैं ... प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया को सताया था'' (1 कुरिन्थियों 15:9)। अपने पिछले जीवन का परेशान करने वाला पहलू उसके मन में रहता था (देखें प्रेरितों 22:4, 5; 26:9-11; गलातियों 1:13; 1 तीमुथियुस 1:13)।

याद रखें कि पौलुस अपनी *यहूदी* प्राप्तियों की बात कर रहा था। यहूदी लोग उत्साह को बड़ा मानते थे (देखें प्रेरितों 22:3; रोमियों 10:2)। पुराने नियम में याजक पिनहास की उसके उत्साह के लिए सराहना की गई थी (देखें गिनती 25:11-13; KJV)। यह भविष्यवाणी की गई थी कि परमेश्वर के घर की लगन मसीहा को खा जाएगी (भजन संहिता 69:9; देखें यूहन्ना 2:17)। पौलुस की अपनी लगन इतनी अधिक थी कि जब उसने देखा कि मसीहियत के कारण यहूदी धर्म को खतरा पड़ गया है तो उसने उसे नष्ट करने की इच्छा की जिसे वह खतरनाक विधर्म मानता था (प्रेरितों 26:9-11)। अन्य यहूदी इस पर *बात* कर सकते थे कि वे कितने उत्साही हैं, परन्तु पौलुस ने तो अपने उत्साह को *दिखाया* था।

पौलुस ने अपनी आत्मिक प्राप्तियों की अपनी सूची यह कहते हुए खत्म की, ''*व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था*'' *(आयत 6ख)*। यूनानी शब्द (*dikaiosune* का एक रूप) का अनुवाद ''धार्मिकता'' का मूल अर्थ है ''सही होने का गुण।''[7] मूसा की व्यवस्था के सम्बन्ध में, इस गुण के विषय में पौलुस ने कहा कि वह ''निर्दोष'' था। निश्चय ही कोई-कोई विरोध करेगा, ''एक मिनट रुकना! व्यवस्था को पूर्ण रूप से यदि किसी ने पूरा किया तो वह केवल यीशु मसीह है!'' पौलुस का यह कहने का क्या अर्थ था कि वह ''निर्दोष'' था?

2:15 के साथ ''निर्दोष'' शब्द पर हमने चर्चा की है। मनुष्यों पर लागू करने पर इसका अर्थ ''सिद्ध'' या ''पाप रहित'' नहीं होता। निश्चित रूप में पौलुस ने सिद्धता या पाप रहित होने का दावा नहीं किया (देखें 3:12; 1 तीमुथियुस 1:15)। इसके विपरीत ''निर्दोष'' का अर्थ यह है कि उस पर कोई आरोप नहीं लग सकता जो सही हो। पौलुस के मन में व्यवस्था की बाहरी शर्तें यानी वे बातें थीं जिन्हें दूसरे लोग देख सकते थे। वह किसी से भी यहूदी रीति या रिवाज़ को मानने में उसके असफल रहने की ओर उंगली करने की चुनौती दे रहा था। उसने किसी दूसरे के शब्द ''मैं तो इन सब को लड़कपन से ही मानता आया हूं'' इस्तेमाल किए होंगे (लूका 18:21)।

यहूदी के रूप में पौलुस की प्राप्तियां शानदार थीं। उसने गलातियों को बताया था, ''यहूदी मत में जो पहिले मेरा चाल चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं ... अपने बहुत से जाति वालों से जो मेरी अवस्था के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता था'' (गलातियों 1:13, 14क)। उसके जीवन का विवरण यह सुझाव देता है कि अगुवे के रूप में उसे सम्मान से देखा जाता था (देखें

प्रेरितों 7:58; 8:1क; 9:1, 2; 22:5; 26:10)। यदि यहूदी लोग *द ज्यूइश टाइमज़* नामक पत्रिका निकालते तो पौलुस की तस्वीर पहले पन्ने पर ''वर्ष का सबसे उत्साही व्यक्ति'' के रूप में प्रकाशित होती।

बदला हुआ दृष्टिकोण

एक समय पौलुस ने अपनी यहूदी प्राप्तियों को अपने आत्मिक बही खाते के ''लाभ'' पक्ष की ओर रखा था, पर अब उसका नज़रिया बदल चुका था: *''परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थी, उन्हें मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है'' (आयत 7)।* पौलुस को पता चल गया था कि ''व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी [परमेश्वर] के सामने धर्मी नहीं ठहरेगा'' (रोमियों 3:20क; देखें गलातियों 5:4)। छुटकारा केवल मसीह में मिलता है (देखें रोमियों 3:24) यानी हम उसमें ''विश्वास से धर्मी ठहराए'' जाते हैं (गलातियों 3:24)। इसी लिए पौलुस ने अपनी पिछली आत्मिक प्राप्तियों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल लिया और अब वे ''लाभ'' की जगह उसे ''हानि'' लगने लगी।

हम ऐसे संसार में रहते हैं जो प्राप्तियों का सम्मान करता है। ट्रॉफियां, मैडल, पुरस्कार, प्रशंसा-पत्र, डिप्लोमा, उन्नति: इनमें से अधिकतर व्यक्तिगत प्राप्ति पर आधारित हैं। हमें प्रशंसा अच्छी लगती है और कई बार अपनी प्राप्तियों की स्वीकृति भी। धर्म की बात हो तो हमारे लिए यह सोचना एक प्रलोभन बन जाता है कि व्यक्तिगत प्राप्ति से ही तय होगा कि हमारा उद्धार हुआ है या हम नष्ट हुए हैं। कई लोग जो यह मानने का दावा करते हैं कि उद्धार ''केवल विश्वास'' से होता है ''न कि कर्मों से'' इस परीक्षा में फंस जाते हैं। बपतिस्मे की अनिवार्यता पर चर्चा करते हुए मैंने कई बार यह आपत्ति सुनी है: ''क्या आप के कहने का मतलब यह है कि मेरे दादा का उद्धार नहीं हुआ था? उनका बपतिस्मा नहीं हुआ पर वह *मेरी नज़र में अब तक के सबसे बढ़िया व्यक्ति* थे!'' ऐसा आपत्ति करने वाला व्यक्ति यह सुझाव दे रहा है कि उसके पूर्वज का उद्धार व्यक्तिगत *प्राप्ति* के कारण यानी भला व्यक्ति होने की स्थिति *पाने* से होना चाहिए। इस प्रकार जो लोग ''केवल विश्वास से उद्धार'' में विश्वास का दावा करते हैं वे अपनी ही शिक्षा का विरोध कर रहे हैं।

जब मैं व्यक्तिगत प्राप्ति पर निर्भर रहने के विरुद्ध चेतावनी देता हूं तो क्या मैं यह कह रहा होता हूं कि हम जो कुछ भी प्रभु के लिए कर सकते हैं वह हमें नहीं करना चाहिए? नहीं। आत्मिक प्राप्ति अच्छी है। मैं तो यह कह रहा हूं कि हमें इस बात को समझना चाहिए कि हम छुटकारे के लिए प्राप्तियों पर निर्भर नहीं रह सकते। उद्धार को कमाने के लिए कोई कितना भी काम कर ले वह उसे कमा नहीं सकता। यीशु ने कहा, ''... तुम भी जब उन सब कामों को कर चुको, जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, 'हम निकम्मे दास हैं; जो हमें करना चाहिए था हम ने केवल वही किया है''' (लूका 17:10)। इसके अलावा छुटकारे के लिए अपनी प्राप्ति पर निर्भर रहने का अर्थ यीशु की मृत्यु को नकारना है। यदि एक व्यक्ति का उद्धार भले काम करने से हो सकता है तो दो का भी हो सकता है; क्योंकि ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता,'' (प्रेरितों 10:34)। यदि दो का हो सकता है तो एक सौ का भी हो सकता है, यदि सौ का हो सकता है तो सभी का हो सकता है, और उस क्रूर क्रूस पर मरने की यीशु को आवश्यकता नहीं

थी। कितना घोर विचार है!

मैं आपको प्रभु की सेवा में जो भी आप कर सकते हैं, उसे करने के लिए कभी निरुत्साहित नहीं करूंगा। पौलुस ने लिखा है, ''सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है'' (1 कुरिन्थियों 15:58)। मैं आपको यह सोचने से निरुत्साहित करूंगा कि आप अपनी प्राप्तियों से परमेश्वर को कर्ज में डाल दें। प्रभु की दया और अनुग्रह पर निर्भर रहना सीखें!

मसीह के अलावा किसी भी बात पर निर्भरता = हानि (3:7, 8)

आयत 7 को फिर से देखें: ''परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हें मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।'' ''जो-जो बातें'' वे *सब* बातें हैं जो पौलुस को अपने आरम्भिक जीवन में विरासत में मिली और उसने पाई थीं। ''मनुष्य के धर्म की प्राप्ति के पहाड़ की चोटी पर बनाए जाकर उसने इसे एक ही झटके में गिरा दिया'':[8] उसने इस सब को ''मसीह के कारण हानि'' ''मान लिया।''

''समझ लिया है'' यूनानी भाषा में अनिश्चित भूतकाल में है। आम तौर पर अनिश्चित भूतकाल में हुए *एक बार की घटना* का संकेत देता है। पौलुस के मन में निश्चित रूप में दमिश्क के मार्ग पर प्रभु के दर्शन से होने वाले उसके जीवन में आए क्रांतिक परिवर्तन की बात होगी (प्रेरितों 9:1-19; 22:4-16; 26:9-18)। तेज़ चमक से उसकी आंखें अंधी हो गई थीं पर उसकी समझ रौशन हो गई। उसका जीवन उलट-पुलट हो गया था! ''अंधकार'' रोशनी में बदल गया था; ''बुराई'' भलाई बन चुकी थी; ''गलत'' सही हो चुका था!

मसीह के अलावा और कुछ भी

अपने लाभ और हानियों का पुन: मूल्यांकन करते हुए पौलुस मसीह के साथ अपनी पहली मुलाकात के साथ रुका नहीं। उसने आगे कहा, *''वरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं'' (आयत 8क)।* इस आयत में प्रेरित ने यूनानी भाषा में वर्तमान काल का इस्तेमाल किया, जो वर्तमान में *निरन्तर क्रिया* का संकेत देता है। चीज़ों को हानि मानना अपने मन परिवर्तन के समय लिया जाने वाला निर्णय ही नहीं था; बल्कि यह प्रतिदिन का निर्णय था। यीशु के सामने पौलुस के लिए किसी भी और बात का महत्व नहीं था। वह ''मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण यानी अपने प्रभु के कारण किसी को भी छोड़ने को तैयार था।''

पौलुस ने आगे कहा, *''जिस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई'' (आयत 8ख)।* प्रेरित ने यहूदी पुरोहित तंत्र में अपना पद गंवा दिया था। उसने अपने साथी देशवासियों में अपना रुतबा खो दिया था। उसके दोस्तों ने उससे मुंह फेर लिया था। बेशक वह अपने ही परिवार में कइयों के लिए विदेशी बन गया था। रातों-रात वह यहूदियों में सबसे प्रिय लोगों में से एक होने से सबसे घृणित लोगों में से एक बन गया। उसने सुरक्षित अस्तित्व को त्याग दिया और अन्तत: अपना प्राण भी खो दिया है। वह यीशु के लिए यह सब करने को तैयार था।

कोई यहूदी मत धारण करने के लिए पौलुस की अगली बात चौंकाने वाली होगी। (वह

कुछ आरम्भिक पाठकों के लिए भी चौंकाने वाली होगी।[9]) उस सब पर जिसकी वह चर्चा कर रहा था, उसने कहा, *''उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं'' (आयत 8ग)।* ''कूड़ा'' के लिए यूनानी शब्द (*skubla*) के लिए अनुवाद करना कठिन है। इसका अर्थ कुत्तों को डाले गए टुकड़े, बदबूदार कूड़े का ढेर, या मनुष्य और पशुओं का मल हो सकता है (देखें KJV)। इसके लिए अंग्रेज़ी शब्द ''गंदगी'' यूनानी शब्द के बहुत निकट हो सकता है। शब्द का अनुवाद जैसे भी हो पर है यह घृणाजनक!

अपने पिछले जीवन पर ध्यान करते हैं (या किसी भी बात पर जो मसीह से ध्यान हटा सकती है), पौलुस ने न केवल इसे व्यर्थ बल्कि उसने इसे उत्तरदायित्व माना अन्य शब्दों में उसने इसे केवल किसी काम का ही नहीं माना, बल्कि वह इससे *ऊब गया* था और इससे *घृणा करता* था। मेरा पालन-पोषण खेती-बाड़ी के माहौल में हुआ है, इसलिए मेरे ध्यान में यह उदाहरण आता है: एक लड़की बड़े गर्व से अपने सुन्दर, नये जूते दिखाती है। फिर उससे वे जूत पहनकर कीचड़, गोबर के बीच में चलने को कहा जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं कि उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी? किसी भी बात के लिए जो लोगों का ध्यान यीशु से हटाए और कहीं और लगाए पौलुस के मन में ऐसा ही था।

मसीह के सिवाय कुछ नहीं

क्या पौलुस को यीशु के पीछे चलने के निर्णय पर खेद था? उतना ही जितना कोई व्यक्ति अपने घर से बाहर कूड़ा फैंकता है और फिर उसे वापस लाने का इच्छुक हो! पौलुस तो उस व्यापारी की तरह था, जिसे ''एक बहुमूल्य मोती'' मिला और उसे खरीदने के लिए उसने ''जाकर अपना सब कुछ बेच डाला'' (मत्ती 13:45, 46) उसने बहुत कुछ त्याग दिया था, पर खज़ाना पाने के लिए कूड़ा कौन नहीं फैंकेगा।

पौलुस के शब्दों से हम क्या प्रासंगिकता बना सकते हैं? यदि आपके और मसीह के बीच में कोई चीज़ आती है, वह चाहे कोई भी क्यों न हो, उससे पीछा छुड़ाएं। इस डर से कि कहीं मुझे गलत न समझ लिया जाए, मैं यह कहना चाहूंगा कि मैं झगड़ालू जीवन को छोड़ने की परीक्षा कर रहा हूं। विवाह जीवन के लिए (मत्ती 19:1-9)। किसी अविश्वासी के साथ रहना कठिन हो सकता है, पर इससे भी अपने विश्वास को दूसरे को बताने का अवसर मिलता है (देखें 1 पतरस 3:1-2)। परन्तु अन्य बातों में यह मूल सच्चाई सही ठहरती है कि कोई चीज़ अपने आप में सही हो सकती है पर यदि यह आपके और प्रभु के बीच में आती है तो इसे छोड़ दें। यह व्यर्थ है। नहीं, यह व्यर्थ से भी *बुरी* है यदि यह उद्धारकर्त्ता से आपके निकट सम्बन्ध को खराब करती है! इसे तुरन्त फैंक दें, ''जैसे जहाज़ को बचाने के लिए कीमती सम्मान को फैंक देना जिसके रहने से तूफ़ान में जहाज़ डूब सकता है।''[10]

मसीह पर निर्भरता = लाभ (3:9-11)

हम ने पौलुस के लाभ-हानि के विवरण के ''हानि'' के पहलू पर ध्यान दिया है। अब ''लाभ'' पक्ष को प्रकाशमान करते हैं।

मसीह को जानना

पौलुस ने आयत 8 में मसीह की ''पहचान'' पर ज़ोर को दोहराया और उसे विस्तार दिया गया है, ''और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।''

मसीह की ''पहचान'' की बात करते हुए पौलुस को केवल मसीह को जानना ही नहीं था, चाहे यह आवश्यक है (रोमियों 10:17)। अनुवादित शब्द ''पहचान'' (*ginosko* का एक रूप) का इस्तेमाल आम तौर पर सम्बन्ध शब्द के रूप में हुआ है: ''[नया नियम] में *ginosko* बार-बार जानने वाले व्यक्ति और पहचानी गई चीज़ में सम्बन्ध का संकेत देता है।''[11]

मसीह को ''पहचानना'' तभी आरम्भ होता है जब हम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन में उसके विषय में पढ़ते हैं (यूहन्ना 20:30, 31)। फिर पश्चात्तापी विश्वासियों के रूप में हम ''मसीह *में* बपतिस्मा'' लेते हैं (गलातियों 3:27)। फिर उसके साथ ''चलते हुए'' (देखें रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:6) और उसके साथ ''सहभागिता'' रखकर (देखें 1 कुरिन्थियों 1:9; 1 यूहन्ना 5:20) हमारी ''पहचान'' उससे बढ़ती रहती है यानी उसके साथ हमारा सम्बन्ध और निकट व और व्यक्तिगत हो जाता है। विल्बर फील्डज़ ने इस अद्भुत ''ज्ञान'' का वर्णन ''व्यापक, उपयोगी, आनन्द-दायक, संतुष्टि देने वाले, गम्भीर, अधिकारात्मक, ऊंचा उठाने वाले, शुद्ध करने वाले, सहायक, [और] बदलने वाले'' के रूप में किया है![12] बेशक ''व्यक्तिगत भरोसे के निकट सम्बन्ध और समर्पण में उसे जानने का अर्थ उसके उद्धार दिलाने वाले लाभों को जानना है।''[13]

इस जीवन में हम यीशु को पूरी तरह से कभी जान नहीं सकते। इसीलिए पौलुस ने हमारे वचन पाठ आयत 10 और 11 में अपना ध्यान मुर्दों से जी उठने की ओर कर लिया। 1 यूहन्ना 3:2 कहता है: ''... जब वह प्रगट होगा तो हम भी ... उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।''

मसीह में पाया जाना

पौलुस केवल मसीह को ''पहचानना'' ही नहीं, बल्कि वह *''उस में पाया ''जाना चाहता था (आयत 9क)।* वह मसीह को ''अपना स्थाई पता'' बनाना चाहता था। वह ''पूरी तरह से मसीह के स्वभाव, कार्य, संगति और उपस्थिति में खो जाना चाहता था।''[14]

क्या पौलुस अपने स्वयं के प्रयासों से इन लक्ष्यों को पा सकता था? नहीं। उसने आगे कहा, *''... न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है'' (आयत 9ख)।* इस आयत में ''धार्मिकता'' शब्द दो बार ''परमेश्वर की दृष्टि में सही ठहरने'' के लिए है।

जब पौलुस ने कहा कि ''न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है'' तो उसके कहने का अर्थ मूसा की व्यवस्था से था। जैसा कि गलातियों 2:16ख में उसने कहा, ''व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें।'' खतना और व्यवस्था के कामों में कोई धर्मी नहीं ठहर सकता था और न ठहरेगा। परन्तु हम इसे और व्यापक रूप में प्रासंगिक बना सकते हैं। इन शब्दों को अपने मन में रेखांकित कर लें: ''न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ।''

बाइबल परमेश्वर की आज्ञा के मानने के महत्व को समझाती है (देखें यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:2, 3)। हमें उस सर्वशक्तिमान की हर आज्ञा मानने की कोशिश करनी आवश्यक है, यहां तक कि जिसे ''छोटी'' या ''अनावश्यक'' माना जाता है, उस आज्ञा को भी (देखें मत्ती 5:19)। मैं पूरे मन से इसे मानता हूं और पूरी सामर्थ से इसे सिखाता हूं। यदि हम अपने आपको परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पित नहीं करते तो हमारा उद्धार नहीं हो सकता (देखें मत्ती 7:21; इब्रानियों 5:8, 9)। इसके साथ ही मुझे यह भी समझ है कि आज्ञा मानने पर ज़ोर देने में खतरा है। यानी यह सोचने का खतरा है कि हमारा उद्धार अपने कर्मों के आधार पर हो जाएगा, जो कि ''अपनी ही [धार्मिकता]'' को साबित करने की कोशिश का खतरा है। मिलोन ने लिखा है, ''उद्धार प्राप्ति नहीं, बल्कि प्रायश्चित है! इसे पाने से नहीं बल्कि यीशु में आज्ञापालन के विश्वास से पाया जाता है।''[15]

पौलुस सिखा रहा था कि ''अपनी उस धार्मिकता के साथ, ... वरन उस धार्मिकता के साथ जो *मसीह पर विश्वास* करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से *विश्वास करने पर* मिलती है'' (3:9)। विश्वास ''मसीह के विषय में प्रस्तावों की शृंखला की बौद्धिक चढ़ाई नहीं, बल्कि मसीह में व्यक्तिगत भरोसे और आत्मसमर्पण का व्यक्तिगत कार्य है।''[16] यह जीवित विश्वास, कार्यकारी विश्वास अर्थात आज्ञाकारी विश्वास (देखें याकूब 2:26; गलातियों 5:6; इब्रानियों 11:8)। यानी प्रभु की इच्छा के आगे पूर्ण समर्पण है। इस भरोसा रखने अर्थात आज्ञाकारी विश्वास में हमारा मसीह में बपतिस्मा (पानी में डुबकी) शामिल है (गलातियों 3:26, 27)। तौभी यह उस सब में विश्वास है जो यीशु ने हमारे लिए किया है, न कि जो हम ने उसके लिए किया है। यह अपने आप को बधाई देने के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता।

किसी मिशनरी को एक स्थानीय शब्द नहीं मिल रहा था, जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में ''विश्वास'' हो।[17] उसे कोई स्वीकार्य शब्द नहीं मिल पाया, जब तक एक दिन किसी ने जिसे सहायता की आवश्यकता थी उसे टोका नहीं। उस आदमी ने पूछा, ''क्या मैं आकर आप पर *पूरा झुक* सकता हूं?'' मसीह में ''विश्वास'' करने का अर्थ उस पर पूरा झुकना यानी उस पर और केवल उसी पर निर्भर रहना है। यदि हम उसे ''पहचानना'' चाहते हैं, यदि हम ''उस में पाया जाना'' चाहते हैं तो हमें यह सीखना आवश्यक है।

सारांश

हमारे वचन पाठ की 10 और 11 आयतों में पौलुस ने कहा कि उसकी इच्छा है कि वह प्रभु के बारे में *सब कुछ* जान ले, यहां तक कि उसके जी उठने की सामर्थ और उसके दुखों की सहभागिता भी (आयत 10)। इन आयतों का विस्तृत अध्ययन हम अगले पाठ में करेंगे।

हमारे लिए वास्तव में महत्वपूर्ण क्या है? यह स्पष्ट है कि जो कुछ पौलुस के लिए महत्वपूर्ण था यानी यीशु और केवल यीशु। लाभ और हानि के सम्बन्ध में प्रेरित ने हर बात को प्रभु को छोड़ ''हानि'' ही माना। उसका एक मात्र ''लाभ'' प्रभु को जानना था। यदि अपने मन टटोलने के बाद आपको अपने और प्रभु के बीच में कोई चीज़ मिले जैसे पौलुस को मिली थी, तो उसे ''कूड़ा'' समझें, ताकि आप मसीह को पा सकें। अपना जीवन आज ही उसे दे दें!

टिप्पणियां

[1]पी. बोनर्ड; राल्फ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू फिलिपियंस,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 144 में उद्धृत। [2]जे. ए. बेंगल; मार्टिन, 145 में उद्धृत। [3]गेरल्ड एफ़ हाथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43 *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 132–33. [4]पेट एडविन हेरेल, *दि लैटर ऑफ पॉल टू द फिलिपियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा. एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969) 117. [5]वही। [6]हाथॉर्न, 134. [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन 'स एक्सपोज़िटरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहलेन्बर्गर इलिनोइस (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 970. [8]एवन मेलोन, *प्रैस टू द प्राइज* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 78. [9]हाथॉर्न, 139.[10]वही, 136.

[11]वाइन, 628. [12]विल्बर फील्डस, *फिलिपियंस–क्रोलोशियंस–फिलेमोन,* बाइबल स्टडी टैक्सट बुक सीरीज़ (जॉपलिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1969), 78. [13]मार्टिन 151. [14]फील्डस, 79. [15]मेलोन, 79. [16]हाथॉर्न, 141. [17]यह उदाहरण एलेस मोटायर, *दि मैसेज ऑफ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर–वर्सिटी प्रैस, 1984), 159.